International Journal of Engineering Research & Management Technology
ISSN: 2348-4039
April-2017 Volume 4, Issue-2
Email: editor@ijermt.org www.ijermt.org

अमरकांत की कहानियों में भारतीय समाज

शोधार्थी :- नीति खरे

सहायक अध्यापक

कला विभाग

रुंगटा कॉलेज ऑफ़ साइंस एंड टेक्नोलॉजी

रिसर्च स्कॉलर , कलिंगा विश्वविद्यालय रायपुर

प्रस्तावना

स्वतंत्रता पूर्व युग में जन्मे और स्वतंत्रता के तुरंत बाद साहित्य के क्षेत्र में उतरे अमरकांत ने सजीवता के साथ इन परिस्थितियों को अपनी कहानियों में उकेरा है। उनकी कहानियाँ स्वातंत्र्योत्तर युग के सामाजिक यथार्थ का खुला आइना है। रवीन्द्र कालिया के शब्दों में "अमरकांत के लिए लेखन एक सामाजिक दायित्व है। वे मानते हैं कि लेखन समय और धैर्य की माँग करता है। उनकी शीर्ष कहानी पढ़ने पर प्रामाणित होता है कि आरंभ से ही इस रचनाकार ने अप्रतिम सहजता के साथ-साथ सजगता से भी इन कहानियों की रचना की है।" उनकी कहानियाँ सनी वास्तव में कोई सुनी-सुनाई घटनाओं का वर्णन नहीं, आँखों-देखा, उनका भोगा हुआ यथार्थ है। अमरकांत की कहानियों का माजिक आधार मध्यवर्ग है। उनकी अधिकांश कहानियाँ निम्न मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ चित्र खींचनेवाली है। अमरकांत जी के शब्दों में "मध्यवर्ग अब बहुत विस्तृत हो गया है। निम्न मध्यवर्ग की हालत मज़दूरों के बराबर ही है। कुछ ऐसे हैं जो मज़दूर हैं..... मगर हालत अच्छी है। सार्वजनिक क्षेत्रों में लगे मज़दूर बेहतर हालत में है। कथाकार किसी भी वर्ग का चित्रण करें विशिष्ट में सामान्य की खोज करें।"" वास्तव में अमरकांत की कहानियों में मध्यवर्ग खासकर निम्न मध्यवर्ग के जीवनानुभवों और जिजीविषाओं को बहुत ही मार्मिकता के साथ आवाज़ मिली है। मध्यवर्ग भिन्न-भिन्न व्यवसाय करनेवाले लोगों के सम्मिलित समूह हैं, जिनके काम-बंधे, व्यापार अथवा जीविका के साधन अलग होते हुए भी उनकी जीवन स्थितियों में विशेष अंतर नहीं होता। डॉ. देवकिशन चौहान के शब्दों में मध्यवर्ग की पहचान के लिए प्रायः कहा जाता है कि यह न धनी, न निर्धन होता है, सुखपूर्वक जीता है, सभी मजबूरियाँ होती है तथा इसके पास विलास के कुछ साधन होते हैं। ये किसी छोटे व्यापार के स्वामी हो सकते हैं अथवा किसी काम धंधे के स्वतंत्र अधिकारी हो सकते हैं।" स्वातंत्रयोत्तर भारतीय समाज में मध्यवर्ग मोटे- मोटे दायरे के अंतर्गत आमदनी, व्यवसाय और शिक्षा की दृष्टि से कई तबकों में विभक्त था। खेतिहर गरीबों की विशाल संख्या तो इसमें शामिल थी ही नहीं, अकुशल और अर्द्धकुशल मजदूर, कुशल श्रमिक, छोटे क्लर्क एवं डाकिये कांस्टेबिल, सिपाही व चपरासी सरीखें कर्मचारी भी इसके अंग नहीं थे। दूसरे सिरे पर धनी उद्योगपति, बहुत बड़े ज़मीन्दार व ताल्लुकेदार और राजवाडों के सदस्य इसके दायरे के बाहर की चीज़ थे। "इन दोनों सिरों के बीच आनेवाले सरकारी कर्मचारी, डाक्टर, इंजिनीयर व वकील जैसे प्रशिक्षित व्यवसायी और व्यापारिक उद्यमी खाते- पीते व्यापारी बडे शहरों के स्कूलों व उच्च शिक्षा के संस्थानों के अध्यापक, पत्रकार, शिक्षित या आंशिक रूप से शिक्षित मँझोले किसान, निजी क्षेत्र में कार्यरत वेतनभोगी, विधायक और विश्वविद्यालय के छात्रों का एक बडा हिस्सा मध्यवर्ग का निर्माण करता था।"" स्वातंत्रयोत्तर भारतीय समाज में मध्यवर्ग के व्यक्ति समस्याओं के घेरे में थे। स्वयं अमरकांत ने भी इन समस्याओं को देखा है और भोग भी है । अमरकांत की कहानियों में चित्रित इन सामाजिक समस्याओं का विश्लेषण आगे किया जाएगा।

1. मोहभंग

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भारतीय समाज में अव्यवस्था छा गई। उदासीनता घुटन और निराशाजनक परिस्थितियों ने जन्म लिया। मोहभंग ने व्यक्ति को अधिक उलझन में डाल दिया। स्वतंत्रता आंदोलन के समय जिस स्वप्न को लेकर लोगों ने अपने प्राणों की बली

चढाई थी, वह एकदम अर्थहीन हो गया। जनता ने जिस नैतिक लोकतंत्र का सपना देखा था, वह मिट्टी में मिल गया। लोकतंत्र के भीतर पूँजीवादी सामंतवादी शक्तियों ने भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया। जनता के बीच स्वप्न भंग और मोहभंग की स्थितियाँ उत्पन्न होने लगीं। अमरकांत जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से स्वतंत्रता की स्मृतियाँ तथा स्पृतिभंग को प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियों की एक विशेषता यह है कि वे मोहभंग के बाद की सही ज़मीन की तलाश की उम्मीद को नहीं छोडते। अमरकांत की कहानी “बस्ती' का पात्र आत्मानंद इस मोहभंग का शिकार है। अपनी बस्ती के विकास के लिए रामलाल और बॉकेलाल के साथ वह कठिन मेहनत करता है। आंदोलन चलाता है। रामलाल असीम नेतृत्व शक्तिवाला व्यक्ति है। वह आन्दोलन का नेतृत्व करता है। आत्मानंद आंदोलन में शामिल हो जाता है। दो वर्ष के आंदोलन के बाद वे सफलता हासिल करते हैं। “यह बस्ती हमारी न्यायसंगत आकांक्षाओं की साकार प्रतिमा है। इसकी एक-एक ईंट हमारे संघर्ष और इच्छाशक्ति को कहानी कहती है। इन्हीं गुणों से कोई जाति तरक्की करती है।” अमरकांत ने प्रतीकात्मक ढंग से भारत और स्वतंत्रता आंदोलन की ओर संकेत किया है। बाद में गली की ईंटें उखडने लगीं। गली के संरक्षकों ने ही उसकी चोरी की। बस्ती में खलबली मच गयी। कहानी के अंत में आत्मानंद की स्थिति को अमरकांत ने यों व्यक्त किया है - “आत्मानंद जैसे जड़ हो गया। . . . .उसके दिमाग में अनोखे विचार उठा करते। कभी वह क्रोध, घृणा और विद्रोह की भावना से कांपने लगता। कभी ईर्ष्या एवं महत्वाकांक्षाओं की लहरों पर झूलने लगता। कभी व्यर्थता और उदासीनता से ग्रस्त। कभी-कभी उसके सामने कई विचार और रास्ते उभर आते लेकिन उसकी समझ में नहीं आता कि सत्य क्या है। आखिर सत्य क्या है।”? यही तो स्थिति थी स्वतंत्र भारत की जनता की भी। स्वाधीनता के बाद जो शांति और सुरक्षा के सपने देखे थे वे अब व्यर्थ हो गए थे और वे अपने ही देश के संरक्षकों से विश्वासघात की शिकार हुई। निरर्थक बन गई। इसी प्रकार 'डिप्टी कलक्टरी ', इंटरव्यू” आदि कहानियाँ प्रत्याशित नौकरियों से वंचित युवकों के मोहभंग की कहानी है। स्वातंत्र्योत्तर भारत में जनता हर तरीके से मोहभंग की शिकार बन गई। मोहभंग ने उनकी ज़िंदगी में बहुत बडी कठिनाइयाँ उत्पन्न कर दीं। इसका प्रत्यक्ष दृष्टा होने के कारण अमरकांत ने इस समस्या को अपनी कहानियों में बखूबी उकेरा है।

2 बेरोज़गारी

स्वातंत्र्योत्तत भारत की सबसे बडी और खतरनाक समस्या थी बेरोज़गारी। स्वतंत्रता के बाद देश के नवयुवकों में यह उम्मीद जगी की कि उनकी समस्याएँ हल हो जाएँगी तथा उन्हें उचित काम-दाम मिलेगा और ज़िंदगी सुचारू रूप से आगे चलेगी। लेकिन यहाँ भी उनके सपनों पर तुषारपात हुआ। शिक्षित होने पर भी उन्हें आवारा होकर घूमना पडा। मतलब युवा पीढ़ी दिशाहारा बन गई। “बढती महंगाई और बेरोज़गारी से अपने अस्तित्व के लिए सामान्य जनता का संघर्ष और भी तीव्र का हो गया। इन सबका प्रभाव हमारे सामाजिक जीवन में प्रतिफलित होने लगा। साहित्यकार चुप न रह सके। अपनी रचनाओं के द्वारा इन समस्याओं को पाठकों कलक्टरी के सम्मुख पेश करते रहे। अमरकांत ने 'इंटरव्यू', 'डिप्टी कलक्टरी', बेरोज़गारों को बात आदि कहानियों के माध्यम से इस भीषण समस्या का खुलासा किया है। “डिप्टी कलक्टरी' अमरकांत की बहुचचित कहानी है। स्वतंत्रता संग्राम ने देश की जनता खासकर पीडित जनता की चेतना में यह स्वप्न पैदा किया था कि देश के आज़ाद होते ही उसकी समस्याएँ हल हो जाएँगी और उसके सपने पूरे होंगे। इस तरह के स्वप्न के पीछे यह विचार था कि उसकी ज़िंदगी की सारी समस्याएँ अंग्रेज़ी राज में पैदा हुई थी और उसके जाते ही इतने अवसर और रास्ते ज़िंदगी के लिए खुल जाएँगे कि बेशक ज़िंदगी बदल जाएगी। अमरकांत प्रस्तुत कहानी के माध्यम से बिना किसी लाग लपेट के बता देते हैं कि सपने टूट रहे हैं, सपने ही कया टूटते मनुष्य के व्यक्तित्व ही टूटता दिखाई पड़ता है। यह तो 'डिप्टी कलक्टरी' की सामाजिक पृष्ठभूमि है। प्रस्तुत कहानी में शकलदीप बाबू मध्यवर्गीय परिवार का व्यक्ति है। पेशे के वह मुख्तार है। अपने बेटे नारायण को डिप्टी कलक्टर बनाने के उद्देश्य को संपूर्ण बनाने के लिए वह उधार लेकर नारायण की फीस भरता है, और आवश्यक सुविधाएँ प्राप्त कराता है। दो बार फेल होने के बाद तीसरी बार नारायण डिप्टी कलक्टरी की परीक्षा पास हुआ। उनका इंटरव्यू भी अच्छा रहा। लेकिन जब फल निकला तो उनका नाम सोलहवाँ नंबर पर था पर दस लोगों की ही लिया गया था। “इंटरव्यू' राशनिंग विभाग में होनेवाले भ्रष्टाचार से नौकरी की समस्या को झेलनेवाले युवकों की कहानी है । पहली बात तो यह है कि इंटरव्यू बहुत देरी से शुरू होती है। दूसरी बात यह है कि बहुत देर तक इंटरव्यू की प्रतीक्षा में खडे रहे उम्मीदवारों को अंत में यह सूचना प्राप्त होती है कि उक्त पद के लिए योग्य व्यक्ति को चुन लिया गया है। प्रस्तुत प्रसंग को अमरकांत जी ने यों व्यक्त किया है - “यह सूचित करते हुए हमें खुशी हो रही है कि हमने इस जगह के लिए योग्य व्यक्ति को चुन लिया है। इस हालत में अब और लोगों का इंटरव्यू लेना संभव नहीं था। अब शाम हो गयी है। आप लोग जिस तरह से यहाँ कष्ट करके आये और शाँतिपूर्बक खडे रहे उसके लिए हम आपको धन्यवाद

देते हैं, साथ ही साथ यह भी आश्वासन देते हैं कि भविष्य में और जगहें खाली होने पर आप सबको मौका दिया जाएगा।"! यह आज की सामाजिक सच्चाई है। समाज में शिक्षित युवकों के बेरोज़गार होकर घूमने का एक कारण यह है। "बेरोज़गारों की बात' कहानी के द्वारा दो बेरोज़गार युवकों की आपसी बातचीत के माध्यम से उन लोगों की दयनीय स्थिति का खुलासा किया गया है। व्यंग्यात्मक भाषा में इन बातों को प्रभावशाली ढंग से उन्होंने प्रस्तुत किया है।इस प्रकार बढ़ती महंगाई और बेरोज़गारी की समस्या को व्यंग्य के माध्यम से अमरकांत जी ने प्रस्तुत किया है। अमरकांत जी की कहानी 'दोपहर का भोजन' भी बेरोज़गारी और उससे उत्पन्न गरीबी का सशक्त दस्तावेज़ है। कहानी में परिवार का एकमात्र आश्रय पति की नौकरी थी, उसके चले जाने से परिवार में आर्थिक विवशता बढ़ जाती है। बडे बेटे को भी नौकरी मिली नहीं है। वह नौकरी के लिए घूमता रहता है। इस समस्याओं के बीच गृहस्थी संभालने के लिए कठिन प्रयत्न करनेवाली सिद्देश्वरी को अमरकांत ने कहानी में प्रस्तुत किया है। अमरकांत ने इन कहानियों के माध्यम से बहुत बडी सामाजिक सच्चाई का पर्दाफाश किया है जो उस ज़माने की ही नहीं बल्कि वर्तमान युग को भी एक बुलंद समस्या है।

3. धर्म, ईश्वर और भाग्य पर विश्वास

समाज में ईश्वर व धर्म के प्रति आस्थापूर्ण विचारधारा व्यापक रूप में द्रष्टव्य है। स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज में जो मोहभंग की स्थिति उत्पन्न हुई थी, उसने साधारण जनता में ऐसे विश्वासों को मज़बूत बनाया। लोग अपनी समस्याओं को ईश्वर की नियति कहकर अपने मन को सांत्वना देते रहे। फलस्वरूप इन विश्वासों का फायदा उठानेवाले सुविधाभोगी वर्ग का उदय हुआ। स्वार्थी और सुविधा संपन्न वर्ग यह नहीं चाहता था कि आम जनता में वैज्ञानिक चेतना जागे या उसमें जीवन जगत के प्रति यथार्थवादी भावबोध विकसित हो सकें। वह हमेशा शोषणवाली व्यवस्था को कायम रखना चाहता था और इसके लिए धर्म और ईश्वर को अपना औजार बनाया गया। मतलब धर्म अक्सर उन लोगों के हाथों का औजार और ईश्वर उनके हाथों का खिलौना बन जाता है जो समाज को पीछे ले जाने की साजिश में शामिल होते हैं और कर्म के स्थान पर भाग्य को तरजीह देते हैं। "परमात्मा का प्रेमी' कहानी का नायक रामअवतार बाबू अत्यंत धार्मिक, दयालू एवं सहृदय व्यक्ति है। वह साल भर गंगा में स्नान करता है और नियमित रूप से रामायण और गीता का पाठ करता है। अपनी पत्नी के बीमार होने पर वह उसका हाल भगवान पर छोड देता है। उसे नींबू पानी देने का सलाह देता है। पत्नी के दर्द से चिल्लाने पर भी वह डॉक्टर को बुलाने के लिए तैयार नहीं हो जाता है। उसका लडका डॉक्टर को बुलाकर आता है। डॉक्टर ने एक खुराक दी, फीस ली और चला गया। रामावतार कहता है "यह ज़िंदगी भी क्या है। किसी का कोई ठिकाना नहीं। आज मैं यहाँ हूँ, कल नहीं भी रह सकता हूँ। दुनियाँ में रोज़ लाखों करोड़ों लोग मरते हैं। अब मरते हैं भाई तो मरते हैं किसी का क्या चारा है? इसलिए इलाज नहीं करवाता। वह कहता है कि वह पिल्ला, जिसको उसने रास्ते से उठाकर ले आया था, उसको भगवान ने बचाया था, बचा लिया। नहीं तो रि कुचलकर मर जाता। वैसे पत्नी को बचना था, डॉक्टर के दवा से बच गयी। अमरकांत ने अपनी कहानियों के माध्यम से अपनी बदहाली को नियति मानकर ज़िंदगी बिताने वाले आम जनता की तस्वीर खींचने के साथ इसका फायदा उठानेवाले सम्पन्न वर्ग का भी चित्रण बखूबी किया है।

4. शोषण के विभिन्न आयाम

भारतीय समाज सामंतवादी पूँजीवादी मान्यताओं पर चलता आया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सामंतवाद यानी सामंती व्यवस्था का बैधानिक अंत हो चुका है। किन्तु अब भी भारतीय समाज में सामंतीय मूल्य मौजूद है। सामंतवाद पूँजीवाद का रूप धारण करते हुए प्रत्यक्ष और परीक्ष दोनों रूपों में समाज पर कार्यरत है। मतलब सामंती शिकंजा यहाँ अब भी मौजूद है पर उसके रूप बदले हैं। अमरकांत के शब्दों में – "भारत का पुराना ढाँचा इस अर्थ में परिवर्तित अवश्य हुआ है कि सामंतवाद के मज़बूत किले ढ़हा दिए गए हैं और उसका स्थान पूँजीवाद ले रहा है और उसने लगभग ले ही लिया है। बहुत से सामंत पूँजीपति बन गए हैं। पूँजीवाद के विकास के कारण ही धन का मूल्य स्थापित हो गया है, अब पूँजी ही प्रतिष्ठा और शक्ति को निर्धारित कर रही है। उसी के कारण मोल–तोल और बाज़ारू प्रवृत्ति बढी है, अवसरवाद और भ्रष्टाचार में वृद्धि हुई है, दलालों और ठेकेदारों को फौज खडी हो गई है और अमीर तथा गरीब को खाई चौडी हुई है।" अमरकांत जी ने जिन बातों को यहाँ उठाया है, वह शत–प्रतिशत सही है। समाज में पूँजी की प्रतिष्ठा से उच्च–नीच, अमीर–गरीब का भेदभाव बढ़ता गया। जो समाज में हाशिएकृत वर्ग की सृष्टि का कारण बना। यह वर्ग हमेशा शोषण का शिकार बनता रहा। अमरकांत ने अपनी कहानियों के माध्यम से ऐसे लोगों को वाणी देने की कोशिश की है जो हमेशा, शोषित पीडित हो और जिनकी ज़िंदगी हाशिए पर हो।

4.1 नौकरों और भिखमंगों पर अत्याचार एवं शोषण

अमरकांत ने नौकरों के ऊपर मालिकों का निर्दय व्यवहार और उसके शोषण की दर्दनाक अभिव्यक्ति अपनी कहानियों में की है। “नौकर' कहानी का “जंतु” भी इस प्रकार प्रताडना झेलनेवाला पात्र है। लगता है नौकर के लिए “जंतु” नाम अमरकांत ने सोच–समझकर रखा है। उस घर के लोग जो अपने को बहुत बडे खानदान के समझते है और नौकर के साथ ऐसा व्यवहार करता है कि वह सचमुच कोई जानवर हैं। 'जंतु' बकील साहब के भारी भरकम कुनबे की सेवा करता है, सबकी गलियाँ सुनता है, पानी भरता है, साफ करता है, बच्चों को घुमाता है मतलब जानवर की तरह काम करता है। सबसे बडी बात तो यह है कि जब वह बीमार पड जाता है तो घर में कोई भी उसकी ओर ध्यान ही नहीं देता। उन लोगों की मानसिकता कुछ इस प्रकार थी–

“शुरू से ही कामचोर है। नखरे फैला रहा है।

ऐसा–बैसा दिन भी तो नहीं कि बुखार हो जाय।

हरारत है, ठंडे पानी से नहा ले, सब ठीक हो जाएगा।

यह सामान्य बात है कि बीमारी के बाद कमज़ोरी आ जाती है। पहले की तरह काम करना मुश्किल हो जाता है। जंतु भी बीमारी के बाद थका–थका महसूस करता है, फिर भी वह काम करने के लिए मजबूर बन जाता है। इस डर से कि नहीं तो नौकरी चली जाएगी। “बहादुर' कहानी का बहादुर तो बच्चा है। शरारती होने के कारण अपनी विधवा माँ से मार खाना पड़ा। वह घर से भाग निकला। वह कथावाचक के घर आ पहुँचा। कथावाचक के घर में नौकर को समस्या और लालसा पहले से ही थी।कथावाचक को पत्नी निर्मला भी नौकर के लिए व्याकुल थी। जब बहादुर मिल गया तो उनकी खुशी का ठिकाना ही नहीं था। बहादुर बहुत ही मेहनती था। लगन से काम करता था। बहादुर को लगा कि उनको अपने घर में जो लाड–प्यार नहीं मिला वह यहाँ मिल जाएगा। लेकिन कुछ दिन बाद कथावाचक का लड़का बहादुर को तंग करने लगा। उसे मारने लगा और गालियाँ देने लगी। निर्मला भी उसके साथ भिन्न तरीके से बर्ताव करने लगी। वह उससे अपनी रोटी खुद सेंकने के लिए कहती है – “चल चुपचाप बना अपनी रोटियाँ। तू सोचता है कि मैं तुझे पतली– पतली नरम–नरम रोटियाँ सेंककर खिलाऊँगी 2 तू कोई घर का लड़का है 2 नौकर चाकर तो अपना बनाकर खाते ही रहते हैं। ....समझ जा रोटियाँ नहीं सेंकेगा तो भूख रहेगा?” घर में आये रिश्तेदार इतना कंजूस था कि वे लोग घर के बच्चों के लिए नहीं लिए कुछ नहीं लाए। इतना नहीं वह झूठ बोलती हैं कि मिठाई लेने के लिए जो पैसा लाया था, वह गायब है। बहादुर पर इल्जाम लगा देती है कि पैसे उसने चुराया है। जब कथावाचक कहता है कि वह ऐसा लडका नहीं तो रिश्तेदार कहती है – “यू डू जय जे दीज़ ५ ५ नॉट नो, दीज़ पीपुल आर एक्सपर्ट इन दिन आर्ट। घर के लोग यह जानकर भी कि बहादुर बेकसूर है उसको डॉटते हैं, फटकारते हैं। तंग आकर वह भाग जाता है। इस अवसर पर निर्मला का कथन है – “कोई भी सामान नहीं ले गया है। उसके कपडे, उसका बिस्तरा, उसके जूते–सभी छोड़ गया है। पता नहीं उसने हमें क्या समझा? अगर वह कहता तो मैं उसे रोकती थोडे बल्कि उसको खूब अच्छी तरह पहना ओढ़ाकर भेजती, हाथ में उसकी तनख्वाह के रुपये रख देती। दो–चार रुपये और अधिक दे देती। पर वह तो कुछ ले ही नहीं गया....” यह निश्चय ही कोई हृदय परिवर्तन नहीं है, न ही उसकी नैतिकता। उन्हें खल रहा है कि इतना कर्मठ, ईमानदार और सहनशील नौकर कहाँ मिलेगा। इन तीनों कहानियों के पात्रों को इसलिए गुलामी की ज़िंदगी भोगनी पडती है कि वे लोग इसके लिए मजबूर है।

4.2 जाति या वर्ण के नाम पर शोषण

जाति या वर्ण के नाम पर हमारे समाज में सदियों से शोषण होता रहता है। इस वर्गभेद ने ही हमारे समाज की जडों को खोखला करके रख दिया है। भारतीय समाज में वर्णव्यवस्था का प्रारंभ युगीन परिस्थितियों के माध्यम से हुआ। प्रारंभ में समाज में काफी अव्यवस्था रही होगी। इस अव्यवस्था को समाप्त करने हेतु समाज में लोगों के कार्यों को बाँट दिया गया। मनुस्मृति में लिखा गया है–

"तस्य कर्म विवेकार्य शोषणामनुपूर्वशः

स्वयंभूवो मनुर्धामानिदं शास्त्रमकल्पयत्।""

अर्थात् उसके और अन्य वर्णों के कर्मों का ज्ञान करने के निमित्त ही मेधावान् स्वायंभुव मनु ने इस शास्त्र की रचना की। अर्थात् वर्णव्यवस्था मनु द्वारा वर्गीकृत व्यवस्था है। उन्होंने समाज को ब्राह्मण, वैश्य, क्षत्रिय एवं शूद्र आदि चार वर्णों में विभाजित किया है। प्रारंभ में इसका विभाजन कर्मों के आधार पर हुआ था हा परंतु धीरे-धीरे कर्म का स्थान जन्म ने ले लिया। इसके बाद जो जिस वर्ण में पैदा होता था उसकी वही जाति मानी गई। "जीवन मूल्यों में परिवर्तन आ जाने से वर्ण व्यवस्था विकृत हो गई। मनुष्य के जीवन में दया, करुणा, नम्रता, अहिंसा, शान्ति, क्षमा, उदारता, संकल्प, बचन, कर्म के विराट एवं उदात्त मूल्य लुप्त हो गये। इसका प्रभाव यह हुआ कि मज़दूर और मशीन, किसान और खेत, लोहा और लुहार, अध्यापक और शिक्षा का संबन्ध व्यावसायिक हो गया।" सामाजिक परिवर्तन के साथ लोगों की मानसिकता में भी परिवर्तन आया। मानसिकता संकुचित होती गई। उच्चवर्ग के मन में निचले तबले के लोगों के प्रति गुलामी मानसिकता पैदा होती गई। ये लोग शारीरिक और मानसिक रूप से उच्चवर्ग के परिहास के पात्र बने और शोषण के शिकार होते रहे। अमरकांत की कहानियों में ऐसे अनेक पात्र है जिन्हें निम्न जाति में पैदा होने के कारण गुलामी का सज़ा भुगतना पडा। "दो चरित्र' कहानी का लड़का, "ज़िंदगी और ज्ञोक' का रजुआ, "बहादुर' का बहादुर, 'नौकर' का जंतु आदि पात्र इसके लिए उदाहरण हैं।

4.3 स्त्री शोषण

स्त्री सदियों से जाने-अनजाने ही शोषण की शिकार है। पुराने ज़माने से लेकर पुरुष सत्तात्मक समाज ने स्त्री के लिए कुछ नियम-कानून बनाए हैं, जिसके अनुसार जीनेवाली नारी को आदर्श नारी की संज्ञा दी गई। मतलब पुरुष की आज्ञा का पालन करते हुए चुपचाप घर संभालकर जीनेवाली नारी को आदर्शनारी की संज्ञा प्राप्त हुई। वहाँ नारी मन की आशा-आकांक्षाएँ दबी पडी थी। अपने मन की इच्छाओं को प्रकट करने में नारी असमर्थ थी। जो अपनी इच्छा के अनुसार जीने का आग्रह प्रकट करती थी अर्थात् जो अपनी मर्जी के अनुसार जीने का साहस दिखाती थी उसे कुलटा की संज्ञा से अभिहित किया गया। लेकिन आधुनिक काल में नारी की स्थिति मजबूत हो गई है। उसने अपने आपको सामाजिक दृष्टि से काफी सुदृढ़ कर लिया है। आज नारी ने उच्चशिक्षा प्राप्त कर ली है। अपने ऊपर उठ रहे अत्याचारों के प्रति आवाज़ उठाने की हिम्मत और साहस आज उसमें है। अब तक के बने-बनाए ढाँचे से बाहर निकलकर स्वतंत्र जीवन बिताने के लिए आज वह एक हद तक काबिल है। अमरकांत ने अपनी कहानियों में स्त्री जीवन के विभिन्न पक्षों को उजागर करने की कोशिश की है। उनकी कहानियों में एक ओर परिवार के लिए समर्पित, पतिपरायण नारी का मतलब, नारी के आदर्श रूप का चित्रण हुआ है तो दूसरी ओर अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत नारी प्रकृति का अंकन हुआ है। अपने ऊपर होनेवाले शोषण के प्रति सजग और उसके प्रति विद्रोह प्रकट करनेवाली नारी भी उसमें विद्यमान है।

4.3.1 स्त्री का सर्वसहा रूप (आदर्श नारी)

अमरकांत जी की कहानी "दोपहर का भोजन' में सिद्देश्वरी के द्वारा नारी के सहनशील चरित्र की अभिव्यक्ति की गई है। सिद्देश्वरी परिवार के प्रति समर्पित पति-परायण नारी है। कठिन आर्थिक तंगी और गरीबी से गुज़रने पर भी परिवार के प्रति अपने दायित्व से वह विमुख नहीं रहती। अपने परिवार को किसी भी मायने टूटने नहीं देती। परिवार में पिता और बच्चों के बीच के संबन्ध में कोई आंच नहीं आने देती। संबन्धों को मजबूत बनाने केलिए वह कोशिश करती ही रहती है। पति और बच्चों से बातचीत करते संदर्भ में वह प्रत्येक व्यक्ति का तारीफ करते हुए झूठ बोलती रहती है ताकि उन लोगों के बीच का रिश्ता ज़्यादा मजबूत बनें। रामचंद के यह पूछने पर कि इतनी कडी धूप में मोहन कहाँ गया है तो सिद्देश्वरी को इसका पता ही नहीं था कि वह कहाँ है। वह झूठ बोलती है - "किसी लड़के के यहाँ पढ़ने गया है, आता ही होगा। दिमाग उसका बडा तेज़ है और तबीयत चौबीसों घंटे पढ़ने में ही लगती है, हमेशा उसी की बात करता रहता है। जब रामचंद छोटे बेटे के संबन्ध में पूछता है तो वह कहती है कि " आज तो सचमुच नहीं रोया। वह बडा ही होशियार हो गया है। कहता था, बडका भैया के यहाँ जाऊँगा।"" मुंशिनी आकर जब बडके बेटे के संबन्ध में पूछता है तो उसका जवाब कुछ इस प्रकार था - "अभी-अभी खाकर काम पर गया है। कह रहा था कुछ दिनों में नौकरी लग जाएगी। हमेशा "बाबूजी, बाबूजी किये रहता

है। बोला–बाबूजी देवता के समान है।"" इस प्रकार अपने परिवार के बीच आपसी संबन्ध को बनाए रखने के लिए वह सख्त कोशिश करती रहती है। "सिद्धेश्वरी के गढ़–गढ़कर कहे हुए उक्त झूठे वाक्यों से स्पष्ट है कि वह भाई–भाई और पिता पुत्र में स्नेह संबन्ध बनाये रखने का आदर्श प्रयत्न करती हैं; जैसे वह समझती है कि स्नेह में बडा बल होता है और उसके सहारे बडे से बडा संकट आसानी से झेला जा सकता है।" अपनी पेट की चिंता किए बगैर वह दूसरों को पेट भर खिलाने के लिए तरसती रहती है। इस प्रकार परिवार के लिए समर्पित, पतिपरायण नारी के सर्वसहा रूप को अमरकांत ने सिद्धेश्वरी के माध्यम से बखूबी उकेरा है।

4.3.2 स्त्री द्वारा स्त्री का शोषण

जैसा कि पहले कहा जा चुका है स्त्री सदियों से शोषण की शिकार है। इस पुरुष वर्चस्ववादी पितृसत्तात्मक समाज में पुरुष द्वारा स्त्री को कई प्रकार से शोषण झेलना पडा। लेकिन स्त्री शोषण के एक और पहलू भी अमरकांत की कहानियों में दृष्टव्य है। वह है स्त्री द्वारा स्त्री का शोषण। कहा जाता है कि स्त्री ही स्त्री की पहली शत्रु है। अमरकांत ने अपनी कहानियों के माध्यम से पुरुष द्वारा स्त्री पर होनेवाले अत्याचार एवं शोषण के साथ–साथ स्त्री द्वारा स्त्री पर होनेवाले अन्याय की ओर भी इशारा किया है। स्त्री को पुरुष के हाथों का ही नहीं कभी–कभी स्त्री के ही हाथों का खिलौना बनना पडता है। कभी–कभी अपने ससुराल में साँस के द्वारा बहू को, बहू द्वारा साँस को, कभी माँ से बेटी को, बेटी से माँ को, जो भी हो समाज में स्त्री को शोषण का शिकार होना पड़ता है। आजकल सोशियल मीडिया में आनेवाली स्त्री संबन्धी समाचार या दुर्घटनाओं को ओरे दृष्टि डालें तो पता चलता है कि उन सब घटनाओं के पीछे एक स्त्री का हाथ ज़रूर होगा। इसी कारण से समाज में ऐसा एक मत भी प्रचलित है कि स्त्री का सबसे बडा दुश्मन स्त्री ही है। अमरकांत मध्यवर्गीय ज़िंदगी के चितेरे हैं। अतः उनकी कहानियों में मध्यवर्गीय परिवार की स्त्रियों में उत्पन्न आपसी झगडे, स्वार्थी एवं लालसी मानसिकता के कारण एक दूसरे का शोषण आदि का ब्यौरा मिलता है। उन्होंने 'सुख और दुख का साथ', 'मरुस्थल में' आदि कहानियों के माध्यम से इन समस्याओं को दर्ज करने की कोशिश की है। "सुख और दुःख का साथ' दो सहेलियों के बीच की कहानी है जो पडोस में रहती हैं। दोनों के बीच आठ सालों की दोस्ती थी। मोहल्ले की बाकी औरतों को उन लोगों की दोस्ती से जलन था। विमल की माँ आठ साल पहले उस मोहल्ले में आयी थी। तब से बबली की माँ के साथ उनका अच्छा रिश्ता था। विमल की माँ अच्छी तरह से लोगों से व्यजहार करती थी। उसकी इस आदत्त से ही दोनों का रिश्ता मज़बूत हुआ था। "मरुस्थल में' कहानी का ब्रज और रजनी भी इसी मानसिकता वाले लोग है। जब वह मोहल्ले में जी रहे थे, तब उसकी सहायता के लिए मालती आया करती थी। रजनी की बीमारी में वह उसकी बहुत मदद करती थी। लेकिन रजनी को मानसिकता कुछ अलग थी। जब उसकी बीमारी ठीक हो गई तो उसका रंग बदल गया। वह कहती है – "क्या यह भैया–भैया लगाए रहती है। न अपनी जाति, न रिश्तेदार | मैं तो ऐसे लोगों को मूँह नहीं लगाती।"/ जब रजनी गर्भवती हो जाती है, तब उसी मालती की सहायता माँगने के लिए पति को भिजवाती है, जिसकी उसने बेइजदी की थी। 'मूस' कहानी की परबतिया भी ऐसी स्त्री है जो मुनरी का पूरी तरह शोषण करती है और उसका पूरा का पूरा फायदा उठाती है। इस प्रकार स्त्री जाति की स्वार्थी, लालसी रूप का चित्रण अमरकांत ने किया है, जो ज़रूरत आने पर दूसरी स्त्रियों का खून चूसती है और बाद में उसको बाहर फेंक देती है।

4.3.3 पुरुष द्वारा स्त्री का शोषण

समाज के भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में, आज जहाँ–जहाँ स्त्री का सानिध्य है, वहाँ स्त्री को कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पडता है। समाज के साथ पुरुष की तुलना में स्त्री का संबन्ध अधिक गहरा है। पुरुष हमेशा व्यस्त रहता है। सीमोन द बोउवर के विचार में "समाज के साथ पत्नी का संबन्ध अधिक निकट होता है। पति की व्यापारिक व्यस्तता उसे सामाजिक समूह से दूर रखती है किंतु इस तरह की कोई व्यस्तता न होने के कारण पत्नी अपने बराबरवालों के समाज के ही भीतर रहती है।'" पहले स्त्री का व्यवहार क्षेत्र घर की चारदीवारी के भीतर सीमित था। तब उन्हें अपने घर में अपने ही पति, पिता और भाई द्वारा और कभी अपनी अशिक्षा और अज्ञानवश या तो फिर मजबूरीवश बाहर से भी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था। लेकिन आज नारी शिक्षित है। अपने घर की चारदीवारी से वह बाहर निकलने लगी है। लेकिन समाज के जिन–जिन क्षेत्रों में उसने अपना पद रखा वहाँ उसे शोषण का शिकार होना पड़ा। पहले तो उसने सब कुछ सहन कर लिया। कारण वह अपने अधिकारों के प्रति सजग नहीं थी। बाद में उसने समझ लिया कि स्त्री और पुरुष दोनों का समाज में समान अधिकार है। वह अपने ऊपर होनेवाले अन्यायों के प्रति आवाज़ उठाने लगी। अमरकांत ने अपनी कहानियों में एक ओर शोषण को झेलनेवाली अशिक्षित नारी का चित्रण किया है तो दूसरी और शोषण के प्रति प्रतिरोध करनेवाली सुशिक्षित

नारी को प्रस्तुत किया है। अमरकांत की कहानी 'लाखो' की पात्र लाखो अशिक्षित नारी है। लाखो से कथावाचक की मुलाकात गंगा नदी के किनारे लगे मेल में होती है। वह नदी के किनारे बैठकर रो रही थी। पूछने पर पता चला कि घर के लोगों से उसे धोखा हुआ है। वे लोग उसे यहाँ छोडकर चले गए हैं। एक औरत के पूछने पर वह बताती है – "क्या करूँ ए मैया,........ हमारे साथ बडा धोखा हुआ है, वे लोग मुझे नैया से नहलाने के बहाने ले आए। हमारे साथ देवर, हमारे आदमी, हमारी जेठानी भी थीं। पहले मुझे गंगा में नहलाया, फिर बोले, तुम यहीं बैठो, हम लोग भी नहाकर आते हैं। तबी से हम बैठे हैं. . . ."' उन लोगों को किसी भी प्रकार अपने कंधे का बोझ उतारना था, इसलिए लाखो को वहाँ छोडकर कर चले गए।

4.3.4 स्त्री प्रतिरोध

अमरकांत ने अपनी कहानियों में शोषण को झेलनेवाली और सबकुछ चुपचाप सहनेवाली नारी को ही नहीं अपने अस्तित्व संकट से बाहर निकलने के लिए संघर्ष के रणक्षेत्र में उतरनेवाली नारी के प्रतिरोधी व्यक्तित्व की झाँकियाँ भी इसकी प्रस्तुत की है। 'तूफान', (प्रिय मेहमान', 'लडका–लडकी' आदि कहानियाँ इसकी बुलंद दस्तावेज़ है। "तूफान' कहानी की सुमन सुशिक्षित युवती है। अपनी ज़िंदगी के छब्बीस वर्ष तक वह पिता के अनुशासन में रही। पिता की मज़ी के अनुसार वह पली–बढी और उसको पढ़ाई भी हुई। अब उसके लिए योग्य लड़का भी ढूँढ रहा है। ज़िंदगी को इस मोड़ में आकर सुमन के मन में बीती हुई ज़िंदगी के प्रति एक निराशा जाग उठती है और आगे की ज़िंदगी में कुछ कर दिखाने की इच्छा पैदा होती है। पिता से वह अपने मन की ख्वाइश बता देती है – "नरक की मर्मांतक पीडा से यह किसी भी हालत में कम नहीं है। बार–बार मेरे अंदर यह सवाल उठता रहा है कि क्या मैं एक झूठी ज़िंदगी नहीं जी रही हूँ, एक बनावटी और ओढी हुई ज़िंदगी, जिसमें अपना कुछ भी नहीं है. . . .।"' अपनी बेटी की बातों के आगे हरिहर बाबू स्तब्ध रह जाता है। वह कहता है कि उसने जो कुछ भी किया है अपनी बेटी की सुरक्षा के लिए है। हरिहर बाबू भी दूसरे माँ–बाप की तरह जो अपने बच्चों को सही दिशा दिखाने में असफल रहे हैं, अपनी नाकामयाबी को छुपाने का प्रयत्न करता है। सुमन कहती है – "सुरक्षा से मतलब आपका धन, आलीशान मकान और ऊँची हैसियतवाले परिवार में शादी से है तो करोडों लोगों में कितने लोग मिलेंगे जो अपने बेटे–बेटियों को ऐसी सुरक्षा दे पाते हैं? और ऐसी सुरक्षा सुविधाओं भरी नकली ज़िंदगी के अलावा सनन्ृतान को क्या दे पाती है? ऐसी ज़िंदगी में अपना अर्जित किया हुआ क्या होता है? ऐसी ज़िंदगी में अपने निजी अस्तित्व की धडकन नहीं होती। ऐसी ज़िंदगी संघर्षों द्वारा मंजिल की यात्रा का संतोष नहीं देती, हार–जीत का अनुभव नहीं कराती। इस प्रकार की सुरक्षा सच्चाइयों का एहसास नहीं होने देती, बल्कि अधिक से अधिक भौतिक सुविधाएँ इकट्ठी करने की मशीन बना देती है, उन सुविधाओं का अभ्यस्त और मुहताज. . .।"' लड़कियों के प्रति समाज का जो दृष्टिकोण है उस पर भी प्रस्तुत कहानी के माध्यम से अमरकांत ने प्रहार किया है। जब हरिहर बाबू सुमन पर यह आरोप लगाता है कि वह लड़की है, वह अकेली कुछ कर ही नहीं सकती तो सुमन इसके लिए उचित जवाब देती है – "मैं जवान हूँ, अपनी लड़ाई खुद लड सकती हूँ, उस लड़ाई में खुशी–खुशी अपना बलिदान दे सकती हूँ। दूसरे के लिए आप गलत लड़ाई और गलत ढंग से जो लड़ाई लड रहे हैं उससे मैं आपको रोक सकती हूँ, मुक्त कर सकती हूँ।"" अंत में सुमन अपनी ज़िंदगी अपनी मर्ज़ी के अनुसार जीने का निर्णय लेती है।

सन्दर्भ सूची

1. अमरकांत, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, भाग–, भूमिका से

2. अमरकांत, कुछ यादें, कुछ बातें, पृ. 3

3. डॉ. देवकिशन चौहान, समसामयिक नाटकों में वर्ग चेतना, पृ. 28

4. पवन कुमार वर्मा, भारत के मध्यवर्ग की अजीब दास्तान, पृ. 39

5. अमरकांत, बस्ती, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड , पृ. 386

6. वही, पृ. 393

7. अमरकांत, कुहासा, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 2, पृ. 23

8. अमरकांत, इंटरव्यू, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड |, पृ. 9

9. वही, पृ. 9

10. अमरकांत, परमात्मा का प्रेमी, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 2, पृ. 453

11. अमरकांत, ज़िंदगी और जोंक, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड |, पृ. 86

12. रवीन्द्र कालिया, अमरकांत एक मूल्यांकन, पृ. |92

13. अमरकांत, दो चरित्र, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड

14 अमरकांत, नौकर, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड |, पृ. 49

15. अमरकांत, बहादुर, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड ।, पृ. 272

16. वही, पृ. 273

17. अमरकांत, बहादुर, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड |, पृ. 275

18. मनुस्मृति, पृ. 26